ISSN - 0974-1526

SAṂSKṚTI SANDHĀNA

Volume - XXVIII No. 1 (January-June) 2015

REFERRED JOURNAL

Editor

Dr. Jhinkoo Yadav

Assistant Editor

Dr. Vinod Kumar Yadav

JOURNAL OF THE RESEARCH INSTITUTE OF HUMAN CULTURE, VARANA

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

Content

			पृष्ठ सं०
	सम्पादकीय		i-iv
१.	सरमा-पणि संवाद : एक विश्लेषण	खालिद बिन युसूफ ख़ाँ	१-१०
२.	नगरों के विकास की वैदिक पृष्ठभूमि	राजनाथ यादव	११-१४
३.	उत्तर वैदिककालीन नगर एवं नगर संस्कृति : एक ऐतिहासिक परिदृश्य	सरस्वती सिंह	१५-२१
४.	प्राचीन भारत में नगरों का उदय एवं नगर प्रशासन	अजय कुमार मिश्र, राखी रावत	२२-३४
५.	हड़प्पाकालीन महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र व बन्दरगाह	शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी	३५-४५
६.	तन्त्रागमीय नगरसन्निवेश	ललित कुमार चौबे	४६-५१
७.	प्राचीन भारतीय नगरों का नियोजन	शशिकान्त राय, रजनीकान्त राय	५२-५७
८.	मध्य गंगाघाटी में नगरीकरण: एन० बी० पी० संस्कृति और लौह तकनीक आधारित अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन	आभा पाल	५८-६६
९.	छठीं शताब्दी ई०पू०में गंगा घाटी में नगरीकरण	भानू प्रताप सिंह	६७-७०
१०.	नगरीय सभ्यता की भारतीय अनुपम धरोहर	ममता सिंह	७१-७४
११.	उत्तर-पश्चिम भारत के प्राचीन नगर : मस्सागा, पुष्कलावती और तक्षशिला के विशेष सन्दर्भ में	विश्वनाथ वर्मा	७५-८३
१२.	भारत का प्राचीन महाजनपद कंबोज और उसके नगर	उपमा वर्मा	८४-८७
१३.	कुषाण कालीन वाराणसी का नगरीय स्वरूप	सुरेन्द्र कुमार यादव	८८-९६
१४.	जातक कथाओं में वर्णित नगरीय व्यापार	रामराज	९७-१०१
१५.	मथुरा का महत्व	महेन्द्र नाथ सिंह	१०२-११०
१६.	पूर्व-मध्यकालीन उत्तर भारतीय नगरों के कुछ प्रमुख तथ्य	एस०एन० उपाध्याय	१११-११६
१७.	नगरीय संस्कृति की दृष्टि में प्रयाग	स्मिता अग्रवाल	११७-१२४
१८.	प्राच्य-कालीन हस्तिनापुर का ऐतिहासिक वैभव	कु० पार्श्वी	१२५-१२७
१९.	गाहड़वाल लेखों में वाराणसी	अर्पिता चटर्जी	१२८-१३७
२०.	दण्डिकालीन प्रमुख भारतीय नगर : एक अध्ययन	संजय कुमार	१३८-१४३

Scanned with CamScanner

दण्डिकालीन प्रमुख भारतीय नगर : एक अध्ययन

संजय कुमार*

महाकवि दण्डी उस युग के विभूति हैं, जिस युग में भारतीय नगरों का महत्त्व अत्यधिक था। ये नगर ही भारतीय संस्कृति के धरोहर हैं। उनके अतीत के झरोखों से हम भारतीय संस्कृति के विविध आयामों का दिग्दर्शन करते-कराते है तथा भावी जीवन पद्धति का निर्माण करते है। इन नगरों से प्राचीन तीर्थ एवं सभ्यताओं के साथ-साथ रहन-सहन, खान-पान, उत्सव-महोत्सव आदि सांस्कृतिक तत्त्वों की झलक प्राप्त होती है। इस प्रकार ये नगर संस्कृति एवं सभ्यताओं दोनों के परिचायक होते हैं। सातवीं, आठवीं शताब्दी के आस-पास उत्पन्न हुए कवि दण्डी अपनी रचनाओं में यात्रा प्रसंगों के द्वारा विविध नगर एवं नगरीय संस्कृति का वर्णन करते है। उनके वर्णन का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक नगरों का दर्शन एवं भारत की स्वर्णिम आभा को साहित्य पटल पर लाना है। कवि को अपने देश की माटी से प्रेम होता है। इसीलिए वह देश के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन करता हुआ उसे विश्व क्षितिज पर लाने का प्रयास करता है। महाकवि दण्डी अपनी तीनों रचनाओं के माध्यम से भारत के प्रमुख नगरों का निम्न रूप में वर्णन करते है-

कवि दण्डी ने अपने वंश परिचय में अचलपुर का नामोल्लेख किया है।[१] अचलपुर वर्तमान में महाराष्ट्र के नासिक जनपद के अन्तर्गत आता है।[२] आचार्य दण्डी ने आनन्दपुर का भी उल्लेख अपने वंश परिचय में ही किया है।[३] यह स्थान भारत के उत्तर-पश्चिम में निर्धारित किया गया है। ह्वेनसांग के अनुसार यह नगर वल्लभी के उत्तर-पश्चिम में स्थित था,[४] जिसे व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र माना जाता था। 'धमेन्द्रकुमारगुप्ता' इसे पंचनद प्रदेश के अंतर्गत मानते है।[५] कवि दण्डी ने अपनी कृतियों में उज्जयिनी का विशेष रूप से वर्णन किया है।[६] इसे महाकालेश्वर की नगरी कहा जाता है। यहाँ प्रमुख रूप से शिव अनुयायियों का निवास था। यह तत्कालीन भारत का समृद्धतम् नगर था। यह नगर सभी सुविधाओं से पूर्ण था। यहाँ आगमन की सुविधाएँ उत्तम थी। 'कनिंघम' महोदय के अनुसार यह आधुनिक 'उज्जैन' था, जो 'शिप्रा नदी' के तट पर स्थित था।[७] 'कालिदास' भी मेघमार्ग के वर्णन में उज्जयिनी का विशेष रूप से वर्णन किये हैं, जो अवन्ति की राजधानी 'विशाला' अर्थात् उज्जयिनी के रूप में आयी है।[८] 'कालिदास' ने इसे 'शिप्रा नदी' के तट पर स्थित बताया है।[९] यहाँ 'महाकाल' का मन्दिर है।[१०] 'दण्डी' ने 'उज्जयिनी' को 'अवन्ति' भी कहा है।[११] 'अवन्तिसुन्दरी' में भी दण्डी ने अवन्ति का ही उल्लेख किया है।[१२] श्रीमद्भागवतपुराण में इसे अवन्तीपुर कहा गया है।[१३] इस प्रकार स्पष्ट है कि दण्डी भी उज्जैन का ही वर्णन विभिन्न नामों से किये हैं। 'कांची' का उल्लेख भी 'दण्डी' ने अपने वंश वर्णन क्रम में

*सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Scanned with CamScanner